

संस्था, समूह, समुदाय और समाज

एम.ए. समाजशास्त्र के लिए सरल एवं परीक्षा-उपयोगी हार्दिक नोट्स

प्रस्तावना

समाजशास्त्र में संस्था, समूह, समुदाय और समाज चार महत्त्वपूर्ण अवधारणाएँ हैं। ये सभी मानव जीवन और सामाजिक संबंधों से जुड़ी हैं, लेकिन इनके अर्थ और विशेषताएँ अलग-अलग हैं। संस्था व्यवहार के नियमों और व्यवस्थाओं को बताती है; समूह व्यक्तियों के पारस्परिक संबंधों को; समुदाय साझा जीवन और अपनत्व को; जबकि समाज व्यापक सामाजिक संबंधों की व्यवस्था को दर्शाता है।

1. संस्था ()

अर्थ एवं परिभाषा: संस्था सामाजिक रूप से स्वीकृत नियमों, मान्यताओं, भूमिकाओं और प्रक्रियाओं की व्यवस्थित व्यवस्था है, जिसके माध्यम से समाज की आवश्यकताएँ पूरी होती हैं। उदाहरण—विवाह, परिवार, शिक्षा, धर्म, अर्थव्यवस्था और राजनीति।

संस्था की प्रमुख विशेषताएँ

यह सामाजिक आवश्यकताओं की पूर्ति करती है।

इसके निश्चित नियम, मूल्य, मान्यताएँ और व्यवहार-पद्धतियाँ होती हैं।

यह व्यक्तियों के व्यवहार को दिशा और नियंत्रण देती है।

संस्थाएँ अपेक्षाकृत स्थायी होती हैं, पर समय के साथ बदल सकती हैं।

संस्था किसी एक व्यक्तिकी नहीं रचना नहीं, बल्कि सामाजिक स्वीकृति से विकसित व्यवस्था होती है।

संस्था के प्रकार

प्राथमिक संस्थाएँ: परिवार, विवाह और नातेदारी जैसी बुनियादी व्यवस्थाएँ।

आर्थिक संस्थाएँ: उत्पादन, वितरण, वनिमय और उपभोग से जुड़ी व्यवस्थाएँ।

राजनीतिक संस्थाएँ: शासन, राज्य, कानून और प्रशासन।

शैक्षिक संस्थाएँ: विद्यालय, महाविद्यालय और शिक्षा-व्यवस्था।

धार्मिक संस्थाएँ: पूजा-पद्धति, धार्मिक नियम और संगठनात्मक व्यवस्थाएँ।

महत्त्व: संस्था सामाजिक जीवन में व्यवस्था बनाए रखती है, सामाजिक मूल्यों को एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक पहुँचाती है, भूमिकाएँ निर्धारित करती है और सामाजिक नियंत्रण में सहायता करती है।

2. समूह ()

अर्थ एवं परिभाषा: समूह दो या दो से अधिक व्यक्तियों का ऐसा संग्रह है जिनके बीच पारस्परिक संपर्क, सामाजिक संबंध, साझा उद्देश्य या 'हम' की भावना मौजूद हो। केवल एक स्थान पर मौजूद लोगों की भीड़ अपने-आप सामाजिक समूह नहीं बन जाती।

समूह की प्रमुख विशेषताएँ

कम-से-कम दो व्यक्तियों होते हैं।

सदस्यों के बीच पारस्परिक संपर्क और संबंध होते हैं।

कुछ साझा उद्देश्य, रुचियाँ, नियम या मूल्य हो सकते हैं।

समूह में सदस्यता और भूमिकाओं की पहचान होती है।

समूह व्यक्तिके व्यवहार, सोच और व्यक्तित्व को प्रभावित करता है।

समूह के प्रमुख प्रकार

प्राथमिक समूह: घनषिठ, व्यक्तगित और आमने-सामने संबंध; जैसे परिवार और मतिर-मंडली।

द्वितीयक समूह: अपेक्षाकृत औपचारिक, उद्देश्य-आधारित संबंध; जैसे कार्यालय, विश्वविद्यालय या कर्मचारी संगठन।

औपचारिक समूह: लिखित नियमों और निर्धारित पदों वाला समूह; जैसे समिति।

अनौपचारिक समूह: स्वाभाविक संपर्क और व्यक्तगित निकटता से बना समूह; जैसे मित्रों का समूह।

अंतःसमूह: वह समूह जिससे व्यक्ति 'हम' का भाव महसूस करता है।

बाह्य समूह: वह समूह जिससे व्यक्ति 'वे' के रूप में देखता है।

महत्त्व: समूह सामाजिकरण, सहयोग, सुरक्षा, पहचान, सीखने और सामूहिक कार्य का आधार है।

3. समुदाय ()

अर्थ एवं परिभाषा: समुदाय ऐसे लोगों का समूह है जिनमें सामान्यतः किसी निश्चित भौगोलिक क्षेत्र में रहने, साझा जीवन, परस्पर संबंधों और समुदाय-भावना का कुछ स्तर पाया जाता है। आधुनिक समय में ऑनलाइन समुदाय भी बनते हैं, इसलिए समुदाय को केवल भौगोलिक स्थान तक सीमित नहीं समझना चाहिए।

समुदाय की प्रमुख विशेषताएँ

साझा जीवन और परस्परिक संबंध।

समुदाय-भावना या अपनत्व की अनुभूति।

परंपराओं, रीति-रिवाजों या कुछ साझा हितों का होना।

सामूहिक पहचान और सहयोग।

समुदाय के भीतर विविधता और मतभेद भी हो सकते हैं।

समुदाय के उदाहरण

ग्रामीण समुदाय—गाँव में रहने वाले लोग और उनके सामाजिक संबंध।

नगरीय समुदाय—शहर या मोहल्ले में साझा जीवन जीने वाले लोग।

जनजातीय समुदाय—साझा सांस्कृतिक परंपराओं और पहचान से जुड़े समुदाय।

धार्मिक या भाषायी समुदाय—साझा धार्मिक या भाषायी पहचान वाले लोग।

ऑनलाइन समुदाय—किसी साझा रुचि या उद्देश्य से डिजिटल माध्यम पर जुड़े लोग।

महत्त्व: समुदाय अपनत्व, सहयोग, सामाजिक समर्थन, सांस्कृतिक निरंतरता और सामूहिक पहचान प्रदान करता है।

4. समाज ()

अर्थ एवं परिभाषा: समाज व्यक्तियों के बीच स्थापित सामाजिक संबंधों, भूमिकाओं, मानदंडों, मूल्यों, संस्थाओं और सामाजिक प्रक्रियाओं की व्यापक व्यवस्था है। समाज केवल व्यक्तियों का जोड़ नहीं, बल्कि उनके बीच संबंधों का जाल है।

समाज की प्रमुख विशेषताएँ

समाज सामाजिक संबंधों पर आधारित होता है।

इसमें सहयोग, प्रतस्पर्धा, संघर्ष और समायोजन जैसी प्रक्रियाएँ होती हैं।

समाज में नियम, मूल्य, मानदंड और संस्थाएँ पाई जाती हैं।

समाज गतिशील है—आर्थिक, राजनीतिक, तकनीकी और सांस्कृतिक बदलावों से बदलता है।

समाज में विभिन्न समूह, समुदाय और सामाजिक संस्थाएँ शामिल होती हैं।

समाज व्यक्तियों के समाजीकरण और पहचान के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

समाज के प्रमुख आधार

सामाजिक संबंध और अंतःक्रिया।

साझा मानदंड, मूल्य और संस्कृति।

सामाजिक संस्थाएँ और संगठन।

सहयोग, श्रम-विभाजन और परस्पर निर्भरता।

सामाजिक नियंत्रण तथा परिवर्तन की प्रक्रियाएँ।

महत्त्व: समाज व्यक्तियों को भाषा, संस्कृति, पहचान, सामाजिक भूमिकाएँ और जीवन जीने के तरीके प्रदान करता है। साथ ही समाज में असमानता, संघर्ष और परिवर्तन का अध्ययन भी समाजशास्त्र का प्रमुख विषय है।

5. संस्था, समूह, समुदाय और समाज में अंतर

आधार	संस्था	समूह	समुदाय	समाज
मुख्य अर्थ	नयिमो व व्यवहार-पद्धतियों की व्यवस्था	परस्पर संबंधित व्यक्तियों का समूह	साझा जीवन व अपनत्व वाला समुदाय	सामाजिक संबंधों की व्यापक व्यवस्था
मुख्य आधार	नयिम, मूल्य, भूमिकाएँ	अंतःक्रिया व साझा उद्देश्य	साझा जीवन व समुदाय-भावना	सामाजिक संबंध व संस्थाएँ
उदाहरण	ववाह, शक्तिषा, धर्म	मत्तिर-मंडली, समति	गाँव, मोहल्ला, ऑनलाइन समुदाय	भारतीय समाज, ग्रामीण समाज
व्यापकता	वशिष्ट सामाजिक व्यवस्था	सीमति या व्यापक हो सकता है	आमतौर पर साझा पहचान वाला जीवन-क्षेत्र	सबसे व्यापक सामाजिक संबंध-व्यवस्था

6. परीक्षा के लिए महत्त्वपूर्ण प्रश्न

संस्था की परिभाषा दीजिए तथा इसकी प्रमुख विशेषताओं का वर्णन कीजिए।

प्राथमिक और द्वितीयक समूह में अंतर स्पष्ट कीजिए।

समुदाय का अर्थ, विशेषताएँ और महत्त्व समझाइए।

समाज की अवधारणा स्पष्ट कीजिए। समाज को केवल व्यक्तियों का समूह क्यों नहीं माना जा सकता?

संस्था, समूह, समुदाय और समाज में अंतर उदाहरण सहित लिखिए।

त्वरति पुनरावृत्ति

संस्था = सामाजिक नियमों और व्यवहार-पद्धतियों की व्यवस्था।

समूह = परस्पर संपर्क और संबंध रखने वाले व्यक्तियों

समुदाय = साझा जीवन तथा अपनत्व की भावना वाले लोग।

समाज = सामाजिक संबंधों और संस्थाओं की व्यापक व्यवस्था।

नोट: ये नोट्स सरल भाषा में परीक्षा-तैयारी के लिए तैयार किए गए हैं। उत्तर लिखते समय परिभाषा, विशेषताएँ, प्रकार, उदाहरण और महत्त्व को अलग-अलग शीर्षकों में प्रस्तुत करें।